गुरुवाणी

आज हमें उन भावनाओं का विकास करना है, जिनसे कि मानव-मात्र में...भाईचारे की भावना का उदय हो, समस्त जीवों के प्रति सहयोग की भावना हो एवं प्राकृतिक सम्पदा की रक्षा के प्रति हम कर्त्तव्यनिष्ठ हों।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ९, वाराणसी। शुक्रवार १५ मई २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

परमपूज्य पीठाधीश्वर जी का 46वाँ अवतरण दिवस एवं सामूहिक विवाह आयोजन

विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १ मई २०१५ को क्रींकुण्ड स्थल, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी में अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के बैनर तले स्थल के वर्तमान पीठाधीश्वर जी का ४६वाँ प्राकट्य दिवस बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। हजारों की संख्या में श्रद्धालु नर-नारी प्रात: से ही पूरे स्थल परिसर एवं बारादरी में पूजा पाठ करते हुए पाये गये तथा अघोराचार्य निवास में पूर्ण अनुशासित एवं कतारबद्ध ढंग से श्रीचरण का दर्शन लाभ लेते रहे। दोपहर को अन्नपूर्णा में प्रसाद वितरण के पश्चात् सायं से स्थानीय भक्तों का बड़ी संख्या में आगमन प्रारम्भ हुआ तथा ससमय सायं आरती का क्रम प्रारम्भ हुआ। सभी भक्तगण पूर्ण शान्ति तथा निष्ठा से प्रांगण परिसर एवं क्रींकुण्ड पर अनुशासित हो अघोरेश्वर के आशीष वर्षा का पूर्ण लाभ उठाते रहें तथा अन्त में आरती के धुम्र को कतारबद्ध ढंग से प्राप्त कर स्वयं को एवं परिवार जनों को धन्य किया। आयोजन हेतु बड़े सरकार यानी परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी के समाधि के पश्चिम में सज्जायुक्त भव्य मंच स्थल की शोभा बढ़ा रहा था एवं मंच संचालन का दायित्व अघोर भक्त श्री सूर्यनाथ सिंह जी ने संभाला था। मंच के मध्य में बाबा कीनाराम का भव्य चित्र बरबस ही लोगों को आकर्षित कर रहा था। फूलों से सजा भव्य स्टेज फ्लड लाइट की रोशनी में आयोजन में चार चाँद लगा रहा था। मंच पर क्रम से सजे शुभ फलों नारियल के साथ पाँच कलश की स्थापना पाँच युगल परिणय को आमंत्रित कर रहे थे। मंच के नीचे सामने कुर्सियों पर स्वच्छ परिधानों में सुसज्जित चेहरों पर हर्ष का भाव लिये एक तरफ श्रद्धालु महिलायें तथा एक तरफ पुरुषों की बैठी पंक्तियाँ अघोरेश्वर के लहलहाती विकसित फसलों के साक्षी के तौर पर सिद्ध हो रही थी। यद्यपि आदिकाल से ही हिन्दुओं में विवाह को एक आवश्यक सनातन संस्कार की संज्ञा दी गयी है। जिसमें सृष्टि के विकास के साथ ही दाम्पत्य जीवन को सुमधुर ढंग से व्यतीत करने का आशय रहा है। परन्तु दुर्भाग्य से वर्तमान समय में इसका विद्रुप रूप परिलक्षित हो रहा है। देहज लोभियों के द्वारा इसे सामाजिक रूप से महिमा मंडित कर जीवन को अभिसप्त बना दिया गया है। जिससे अधिकांश परिवारों में बालिकाओं का जन्म लेना ही दंश स्वरूप माना जा रहा है। जिसका कुफल भ्रूण हत्या जैसे अपराधिक कृत्य में दृश्यमान है। ऐसे कुरीति पर कुठाराघात के लिये वर्तमान में पूज्य पीठाधीश्वर जी के द्वारा समाज को जागरूक करने एवं युवा पीढ़ी को नये दिशा की ओर अग्रसर करने हेतु युवा सम्मेलन द्वारा भी प्रेरित किया गया है ताकि वे तथा उनकी आने वाली सन्तति पूर्णत: इस दावाग्नि की लपट से अछूती रहे तथा एक ऐसी स्वस्थ परम्परा विकसित हो जिसमें नर-नारी अपना दाम्पत्य जीवन बखूबी निर्वाह करें तथा सुखी सम्पन्न जीवन यापन हेतु अधिकृत हो। परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी के द्वारा निरूपित अघोर विवाह पद्धति जो बिना किसी आडम्बर सरल रूप में समाज को प्रदान किया गया है। जिसके द्वारा वैवाहिक रश्मों को सम्पन्न कराते हुए वर-वधू को एक ऐसे परिणय सूत्र में आबद्ध किया जाता है जिससे उनका भावी जीवन निर्लोभी पुरुषार्थी एवं दोष रहित हो तथा शनै: शनै: समाज से दहेज की कुरीति की विदाई हो सके। जो दाम्पत्य जीवन के बुनियाद में ही बैठकर जीवनपर्यन्त दु:ख देता एवं सालता रहता है तथा आने वाली पीढ़ी भी अनायास ही इसका शिकार बनती चली जा रही है। ऐसे सुयोग अवसर पर युवा समाज को परिणय संदेश देने के लिए निम्न सौभाग्यशाली वर-वधू उपस्थित थे।

१. चि० अमरीश कुमार सिंह (छोटू) पुत्र श्री सूर्य नारायण सिंह निवासी ग्राम-समेदा, आजमगढ़ (उ०प्र०) एवं आयु० श्रद्धा सिंह पुत्री श्री विजेन्द्र बहादुर सिंह निवासी शान्ति सदन एस-४/५९, अर्दली बाजार, वाराणसी (उ०प्र०)।

२. चि० नीरज सिंह पुत्र श्री हरिवंशनारायण सिंह निवासी ग्राम-जागेबँराव, जिला-कैमूर (भभुआ), बिहार एवं आयु० शैव्या सिंह पुत्री श्री दिलीप सिंह निवासी ग्राम-बरसिंग्हा, पोस्ट-लक्षुटोला, जिला-भोजपुर आरा, बिहार।

३. चि० अक्षय सिंह पुत्र श्री उदयनारायण सिंह निवासी ग्राम-रुद्धरी, पोस्ट-लक्षेरामपुर, जिला-आजमगढ़ (उ०प्र०) एवं आयु० दिप्ती सिंह पुत्री श्री लाल बहादुर सिंह निवासी ग्राम-खनियरा, पोस्ट-खनियरा, जिला-आजमगढ़ (उ०प्र०)।

४. चि० देवेन्द्र कुमार सिंह पुत्र श्री लाल बहादुर सिंह निवासी ग्राम-खनियरा, पोस्ट-खनियरा, जिला-आजमगढ़ (उ०प्र०) एवं आयु० रुचि सिंह पुत्री श्री राजेश्वर सिंह निवासी ग्राम-मुजौना, पोस्ट-तुर्तीपार, जिला-बलिया (उ०प्र०)।

५. चि० प्रवीण कुमार सिंह पुत्र श्री गंगेश्वर सिंह निवासी ग्राम-मेहुड़ी कलाँ, पोस्ट-राबर्ट्सगंज, जिला-सोनभद्र (उ०प्र) एवं आयु० निधि सिंह पुत्री श्री सत्यनारायण सिंह निवासी मकान नं० के-३/२७, गायघाट, वाराणसी (उ०प्र०)।

इस प्रकार आयोजन से पूरा वातावरण सुरम्यता के साथ अनुपम सुगन्ध बिखेर रहा था। जिसमें अनुशासित होकर कार्यक्रम के अनूठे दृश्यावलोकन कर लेने के लिए श्रद्धालुजन लालायित थे। तभी पाँचों युवा वर एवं कन्याओं को बारी-बारी से आयोजन स्थल पर पधारने का निर्देश किया गया। जिसका समस्त भक्तों एवं अघोर बारातियों के द्वारा तुमुल हर्ष ध्वनि से एवं हर हर महादेव के जयकारे के साथ स्वागत किया गया। क्योंकि ये युवा समाज को एक नयी दिशा, एक नयी सोच दे रहे थे। जो दहेज, नशा, फिजूलखर्ची जैसे कुरीतियों से अभिसप्त सामाजिक प्रदूषण की चुनौती को स्वीकार कर एक नये समाज सृजन के लिये अघोरेश्वर के सफल नेतृत्व में अनूठा दृष्टान्त प्रस्तुत करने का सौभाग्य पा रहे थे जिसकी चर्चा महिला एवं पुरुष वर्ग में बड़ी ही श्रद्धा एवं भाव भरे वातावरण में हो रही थी। तभी स्थल में श्वेत परिधानों में जैसे त्रिदेवों का आगमन हुआ। सबसे आगे पूज्य पीठाधीश्वर जी मध्य में बनौरा आश्रम के अघोर ऋषि पूज्य श्री बाबा प्रियदर्शी राम जी तथा उनके पीछे बनौली आश्रम के अधिष्ठाता श्री करमवीर बाबा ने मंच पर आकर अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। पीठाधीश्वर जी के पश्चात् बारी-बारी से दोनों सन्तों द्वारा भी बाबा कीनाराम जी को श्रद्धा सुमन चढ़ाकर चरणों में सिर झुकाया गया। श्रद्धालुओं द्वारा लगातार समवेत स्वर में मंच पर आसीन बाये से दाये क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु, महेश का दर्शन कर हर हर महादेव के स्वर लहरी से प्रणाम किया जाता रहा।

त्रिदेवों को माल्यार्पण का सौभाग्य गाजीपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रणजीत सिंह जी

शेष पृष्ठ दो पर

गृह-स्वामिनी

भारत के सनातन समाज में यह पुरानी व्यवस्था उद्धृत है कि **''यत्र नारी पूज्यन्ते तत्र रमन्ति देवताः''** यानी जिस राष्ट्र में, समाज में, परिवार में नारी की इज्जत की जायेगी, सम्मान दिया जायेगा, वहाँ देवत्व की अनुभूति होगी। देवता का अर्थ होता है जो देने वाला हो, जिसके पास प्रदत्त का भण्डार हो। यह यूँ ही नहीं कहा गया है क्योंकि गृहस्थी का रथ दोनों पहियों पर चलता है, खगों के उड़ने के लिये दोनों पंखों का समान रूप से शक्तिशाली होना आवश्यक है, जैसे ताली दोनों हाथों से बजती है, उसी प्रकार जीवन में विशेष कर गृहस्थ जीवन में तो नर-नारी का परस्पर सद्भाव, सहकार, प्यार, एक दूसरे के प्रति अच्छी एवं उदात्त भावना उनके परिवार को दिनोंदिन ऊँचाई पर उठाता जाता है। स्वस्थ गृहस्थाश्रम से ही संस्कार पाकर भक्त, ज्ञानी, विद्वान्, समाज सुधारक, महापुरुष ने समाज के प्रति अपना योगदान किया है। भगवान शंकर ने स्वतः कहा है कि-

शक्ति विना महेशानि सदाऽहं शव रूपकः।
शक्ति युक्तौ यदा देवि शिवोऽहं सर्वकामदः॥

अर्थात् हे पार्वती! शक्ति के बिना मैं हमेशा शव के समान हूँ। मैं जब शक्ति युक्त रहता हूँ तब सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला मंगल रूप हूँ। कहा भी गया है कि शिव बिना शक्ति के शव के रूप में हैं। यदि शक्ति नहीं तो सब कुछ तेजहीन है तथा सृष्टि का समय चक्र कभी भी निरन्तरता नहीं पा सकता। समय चक्र शक्ति के अधीन है। समय को ही काल कहा गया है। काल तभी गतिमान है जब उसका सुयोग शक्ति से होता है। अतः स्पष्ट है कि शक्ति भी आधार के बिना प्रगट नहीं हो सकती। इसी चिन्तन से नर नारी के एकात्म रूप में आदिशक्ति की उपासना की जाती है।

शिव-शक्ति, सीता-राम, राधाकृष्ण, अत्रि-अनुसूया, नल-दमयंती की गाथा ही हमारे संस्कृति की रीढ़ रही है जबकि आज इक्कसवीं शताब्दी में जब विश्व अधनातुन सभ्यता में विकसित होने का स्वाँग भर रहा है, ऐसे में पारिवारिक कष्ट की दावाग्नि हमें सोचने को विवश का रही है कि आखिर इसका क्या कारण है? पारिवारिक सुख-शांति का अभाव क्यों हमें सता रहा है? तो इसके मूल में आपसी समझ की कमी, एक दूसरे के प्रति असम्मान की भावना, सास के द्वारा बहू को बेटी न समझकर उसे दीगर परिवार का समझना, जली कटी सुनाना, कम दहेज लाना, आदि छोटी-छोटी बातों से ही गृहस्थी की हरी भरी खेती झुलस कर रह जाती है। माँ-बेटे, पति-पत्नी, भाई-बहन के संबंधों में खटास आ जाती है। आज पारिवारिक अदालतों से लेकर माननीय उच्चतम न्यायालय तक में पति-पत्नी का झगड़ा, अपने चरम सीमा पर है; इसका बड़ा सीधा सा निवारण है कि हम एक दूसरे के प्रति सहिष्णु बनें, विश्वास बढ़ायें। नयी आयी बहु को अपने परिवार का अंग समझें। उसके पीहर को असम्मान की भावना से कभी न देखें, साथ ही आधुनिक बहुओं को भी अपनी समझ विकसित कर अपने पति के साथ ही घर के बुजुर्गों, रिश्तेदारों, परिवार जनों को सब प्रकार से सादर सम्मान देना उनके माता-पिता परिवार द्वारा प्रदत्त संस्कार की ही प्रतिध्वनि होती है। अतः नर-नारी या वर-वधू का एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग, सम्मान, सद्भावना उनके जीवन में नवयुग का विहान कर उन्हें प्रसन्न जीवन हेतु अधिकृत कर देगा।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

परमपूज्य पीठाधीश्वर जी का 46वाँ.....

तथा श्री चन्द्रनाथ ओझा को प्राप्त हुआ। संचालक महोदय के निर्देशानुसार श्री रणजीत सिंह जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में गुरु अर्चन के साथ ही समस्त जनों का अभिवादन किया। तत्पश्चात् ४६ प्रज्वलित दीपों से सजे थाल में पीठाधीश्वर जी के साथ ही अघोर सन्तों की आरती की गयी। तत्पश्चात् हजारों भक्तों के मध्य प्रसाद वितरण को ध्यान में रखते हुए पीठाधीश्वर जी के ४६वें प्राकट्य दिवस के उपलक्ष्य में एक विशाल आकार के केक की प्रस्तुति मंच पर हुई। जिसे परम पूज्य सन्तों के साथ मिलकर परम पूज्य पीठाधीश्वर जी ने काटा तो नयनाभिराम दृश्य को देखकर भक्तों में हर्ष की लहर फैल गयी एवं जोरदार तुमुल ध्वनि के मध्य हर हर महादेव के स्वर लहरी को बारम्बार खुले गगन में फैलाकर वातावरण में भक्ति रस घोला जाता रहा। भक्तगण भाव विभोर होकर परम पूज्य पीठाधीश्वर जी को मंच पर पूज्य बाबा प्रियदर्शी राम जी द्वारा केक खिलाते बाल सुलभ हर्षित छवि को निहारते रहे।

विगत वर्ष १ मई २०१४ को इसी प्रांगण में परिणय सूत्र में आबद्ध सभी पाँचों सफल दम्पतियों को भी आमंत्रित किया गया था जिन्हें क्रमवार मंच पर बुलाकर अघोर सन्त श्री प्रियदर्शी राम जी के करकमलों से स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ध्वनि विस्तार यंत्र से संचालक जी द्वारा बार-बार श्रद्धालुओं को प्रसाद हेतु अनुशासन बनाये रखने एवं अपने-अपने स्थान पर बैठे रहने का निर्देश किया गया। तत्पश्चात् परम पूज्य पीठाधीश्वर जी के साथ अघोर द्वय ऋषियों ने भी मंच से उतर कर अपने-अपने आसन को ग्रहण किया। तत्पश्चात् परिणय में बंधने जा रहे पाँचों वरवधू को मंच पर अपने कलश के समक्ष आकर स्थान ग्रहण करने का अनुरोध किया गया। जहाँ अघोर चरणानुरागी युवा पंडित दुर्गेश जी शुक्ल अघोर विभूति एवं तिलक से अच्छादित होकर ध्वनि विस्तारक यंत्र के साथ अपने युवा यजमानों को विधान तैयारी हेतु निर्देशित करते रहे। इसी क्रम में सर्वप्रथम सफल योनि का परायण हुआ। जिसे वर-वधू एवं उनके परिजनों के साथ ही पूरा स्थल परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं द्वारा श्रद्धा श्रवण का लाभ उठाया गया। तदोपरान्त अघोर विवाह पद्धति की विशेषता एवं विधान को संक्षेप में बताया गया है भारतीय धर्मग्रन्थों में गृहस्थ आश्रम को सर्वोत्कृष्ट आश्रम की संज्ञा प्रदान की गयी जिससे सहज में ही चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति अपेक्षाकृत सुगमता से हो सकती है। परमपूज्य अवधूत भगवान राम जी ने भी कहा है कि ''गृहस्थ आश्रम में रहते हुए सदाचार व्रत से मनुष्य अपने कुटुम्ब का पालन पोषण करते हुए उस दिव्य अनुभूति को प्राप्त कर सकता है जिसे बड़े-बड़े महात्मा कड़ी तपस्या से अर्जित करते हैं।'' पुरुष तथा स्त्री एक दूसरे के पूरक होते हैं एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा रहता है दोनों मिलकर पारस्परिक सहयोग से मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं यही कारण है कि सनातनीय परम्परा में विवाह सम्बन्धों को बड़ा ही पवित्र और मंगलकारी माना गया है। परन्तु आज के भौतिकवादी युग में अर्थ की प्रधानता होने से विवाह अब दो पवित्र आत्माओं का मिलन न हो करके अच्छा खासा व्यापार बन गया है। अर्थाभाव से कन्यायें आत्महत्या करने को विवश हो रही हैं। धन सुविधाओं से भरापूरा रहने पर भी वर पक्ष के द्वारा तिलक दहेज की आकांक्षा को सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान की गयी है। जिसके पूरा न होने पर जघन्य एवं अमानुषिक व्यवहार भी कन्याओं को सहना पड़ता है जिसके निवारण एवं प्रसन्न सफल जीवन हेतु सर्वप्रथम वरगण को फिर वधू गण को शपथ संकल्प का उच्चारण कराया गया। फिर तागपाट के विधान के पश्चात् वधुओं के जनक द्वारा कन्यादान की सम्पन्नता करायी गयी। निर्देशानुसार वर ने वधू के गले में फिर वधू ने वर के गले में जयमाल डाला जिसका हर्ष ध्वनि एवं हर हर महादेव के जोरदार स्वर से स्वागत किया गया। तदोपरान्त विधिनुसार सिन्दूर दान की रश्म सम्पन्न करायी गयी। तत्पश्चात् परम पूज्य पीठाधीश्वर जी के द्वारा स्वयं मंच पर जाकर पाँचों वर वधू को अलग-अलग आशीर्वाद दिया गया एवं श्रद्धालुओं द्वारा इनके भावी मंगलमय जीवन की मन ही मन कामना की गयी। परम पूज्य पीठाधीश्वर जी के द्वारा प्रत्येक नवदम्पति को उपहार प्रदान किया गया। इस प्रकार बिना दहेज स्वेच्छया वर-वधू एवं उनके परिवार जन परस्पर एक दूसरे के हो गये एवं इस पुनीत आयोजन के सम्पन्नता हेतु हृदय से औघड़ अघोरेश्वर को नमन किये तत्पश्चात् परिसर में ही स्टालों पर सजे हुए विभिन्न व्यंजन का रसास्वादन कर वर-वधू के साथ सभी ने अपने को कृतार्थ किया।

अघोर विवाह पद्धति से न केवल भविष्य को संवारा जाता है बल्कि बदलते स्थिति परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए जाति एवं देश तक के बन्धन को तोड़ने की व्यवस्था उद्धृत की गयी है। जिससे फिजूलखर्ची, आतिशबाजी इत्यादि असाध्य बीमारी से मध्यम वर्ग को छुटकारा मिल सके। संस्थान द्वारा समस्त परिणयों को रजिस्टर कर विधान का रूप देते हुए लिखित प्रतिज्ञा पर भी हस्ताक्षर कराने की व्यवस्था है जिससे विवाह का वैधानिक स्वरूप भी सदा जीवन्त बना रहता है।

पड़लन राम कुकुर के पाले, खींच खांच के कइलन खाले

यह एक पौराणिक कथा है। एक समय की बात है एक कुत्ता एक नगर में रास्ते पर सोया था। एक ब्राह्मण उसी रास्ते से जा रहा था। उसे भय ने धर दबोचा। भय की शंका में उसने कुत्ता को एक डंडा लगा दिया। कुत्ता अपना कोई कसूर न देखकर महात्मा श्रीराम के दरबार में उपस्थित हुआ और दरखास्त किया। उसकी अर्जी की सुनवाई के लिए राम जी उसे बुलवाये और सभी बातें उसकी सुनी। ब्राह्मणों की बहुत इज्जत उस समय थी। राम जी उस ब्राह्मण को दण्ड देने से बड़े घबड़ा रहे थे। राम जी सोचने लगे कि क्या किया जाय। गलती तो उसने की है दण्ड मिलना चाहिए। उन्होंने कुत्ते से ही पूछा कि बताओ क्या दण्ड दिया जाय। कुत्ते ने कहा कि आप न्यायालय के आसन पर से हट जाय। राम जी आसन से हट गये और कुत्ते को बैठने के लिए कहे। बैठते ही उसने फैसला सुनाया, पण्डित जी को इन ब्राह्मण देवता को किसी शिव मंदिर का महन्त बना दिया जाय। फैसला कर जब वह हटा तो लक्ष्मण, भरत, राम इत्यादि सभी ने उससे पूछा कि अपकार के बदले तुमने उपकार किया भाई। यह तो कोई सजा नहीं हुई। कुत्ते ने अपनी पूर्व कथा सुनाई। मैं बड़ा पवित्र ब्राह्मण था। नित्य प्रति हवन करता था। मैं शिव का उपासक था। शिव मंत्र से हवन करता था। ठंडे दिनों में मेरे नाखूनों में घी लग जाता था। हवन करने ऐसा हो जाता था। जब मैं घर आता तो मेरे पत्नी गरम दाल या दूध वगैरह दे दिया करती थी। हाथ डालने पर सभी खाद्य पदार्थ हवन के घी से मिश्रित हो जाते थे। यह शिव निर्माण खाने का फल हुआ कि मैंने कुत्ते की योनि में जन्म लिया। पण्डित जी शिव मन्दिर का महन्त होंगे तो इन्हें हमेशा शिव निर्माल खाने का अवसर प्राप्त होगा, हमारी योनि में यह हमेशा जन्म लेंगे। शिव निर्माल, विष्णु अंश और काचा परा जो खाये, वह निर्धन कि कोढ़ी। शंख बाजे बलाये भागे, दुश्मन के मुँह करखा लागे।

गुरु एक स्टेशन के समान है; आप वहाँ से हर स्थान का टिकट ले सकते हैं

समझने की बात एक मास्टर के साथ

भूत कहे अवधूत कहे रजपूत कहे जोलहा कहे कोऊ,
काहू के बेटा बेटी न व्याहिब मांग के खाईब मसजिद में सोईब काहू के जात बिगाड़ब नाहीं।

मास्टर! इस फकीर की बात याद आ गई जिसने कहा था कि जात पात धन धरम बड़ाई। हित मीत सदन समुदाई। सब तजि तब गुरु राम चरन मन लागी। इसका लेशमात्र भी अभिमान होगा तो चित्त गुरु राम में लय नहीं होगा और इस स्थिति में सब फीका होगा और अपना जीवन में इस फीकेपन का अनुभव व होने लगता है। चित्त का लय ईश्वर में अपने पूर्व कर्मों का दहन करता है। निर्बीज होकर जीव ईश्वर संज्ञा को प्राप्त होते हैं। दग्धबीज की तरह चित्त होने पर आप समझ लीजियेगा कि आप ईश्वर के गोद में है। जब तक चित्त में चांचल्य है इच्छाएँ हैं सोने का महल भी दुःखकर ही होगा। दुःख क्या है? मनोनुकूल इच्छा की पूर्ति न होना ही, इनसे बचने के लिए गुरु की शरण की आवश्यकता है। गुरु एक स्टेशन के समान है आप वहाँ से हर स्थान का टिकट ले सकते हैं उपकार से नर्क का। और उपकार से स्वर्ग का उपकार ही मानव जीवन की सार्थकता हैं। उपकार अपना हो या पराया। मन क्रम से उपकार में लगे व्यक्ति ही संत कहे जाते हैं। ये कोई जंगल, पहाड़, गुफाओं में नहीं रहते मास्टर।

पवित्र विचार ही उनका विहार है जिसमें संत विचरण करते हैं। छूत या अछूत जिनमें यह विचार पाया जाता है वही हमारा है और हमें उन विचारों का स्वागत करना चाहिए।

पवित्र आचरण, पवित्र व्यवहार, सभी का शुभ चिन्तन साधु का लक्षण है

सर्वेश्वरी की प्रतीक माताओं एवं शिवों के प्रतीक मेरे बन्धुओं!

आज इस पवित्र पर्व पर आप आये हुए हैं। हमारे प्रियजन, हमारे अतिथियों के प्रवचन जो सुने वह सभी संत-महात्माओं और फकीरों की वाणियों से सम्बन्धित था। और आप सोच सकते हैं कि जो इतने व्यस्त रहने वाले व्यक्ति कार्यक्रमों में, इन संत-महात्माओं और फकीरों के वाणियों के प्रति इतना याददाश्त बनाये हुए हैं। यहाँ आपने देखा कि इस देश के बड़े बड़े राजा और महराजाओं, नेताओं की गुण गाथाओं को नहीं गाया गया। साधु और फकीरों के गुण गाथाओं को गाया गया। जो आज भी भारतीय जनता के हृदय में जन जन में साधु महात्माओं को जगह मिला हुआ है, श्रद्धा मिला हुआ है वह इस देश के नेताओं को, राजा-महाराजाओं को भी नहीं मिलने वाला है। सन्त और महात्मा का कोई अलग से विशेषता नहीं होता है। इन्हीं लोगों में जो पवित्र आचरण का हो जाता है, जिनका पवित्र व्यवहार हो जाता है जिनके प्रत्येक मनुष्यों के प्रति शुभचिन्तन होने लगता है, वही संत और महात्मा हो जाता है। और वह अपने भारतीय जो नागरिक हैं, ग्रामीण हैं, उनके अमोघ विश्वास का भाजन हो जाता है। वह विश्वास बड़े बूढ़े लोग अपना भी देते हैं और अपने छोटे बच्चों से भी प्रेरणा करते हैं कि वह संत, महात्माओं और फकीरों में विश्वास करें। उनका गुण, उनका व्यवहार, आचरण अपने आचरण में उतारो जिससे तुम्हारे आचरण का जो स्वस्थ और सबल मार्ग है, उसे तू तय कर सके और अपने जीवन का जो एक पवित्र अनुभूति जिसे शान्ति कहिये और सभी तरह से पूर्ति कहिये वह प्राप्त होता है। बहुत पवित्र, सुन्दर और व्यवहारिक रूप में आ सके, ये लोग सभी व्यवहारिक बातें कहें हैं। कोई दार्शनिक बातें नहीं कहा है। मैं आशा करता हूँ इसे आप आचरण, व्यवहार में उतारेंगे। अपने जीवन की जो कमी है, उसकी पूर्ति करेंगे, अपने आचरण में ले आ करके।

चौथे पृष्ठ का शेष

अपनी पूजा भगवती की पूजा है

हनुमान ने संकेत किया। फिर भी तुलसी नहीं पहचान पाये। क्योंकि चन्दन लगाने का चार पैसा लेते थे, अपने खर्च के लिये और यही बाधक हुआ चार पैसा राम को पहचानने में। हनुमान ने दूसरे दिन कहा यह चार पैसा भी छोड़ दो। एक ही का आश्रित रहना चाहिए। जो उसका आश्रित है उसे मनुष्य का आशा नहीं करना चाहिए। रघुनाथ ने कहा "मोर दास कहाई करे नर आस को, तो कांहि लगि उसे मोर विश्वास।" एक तरफ दास बनेंगे, दूसरे तरफ दूसरे का आस रखेंगे।

यही कहूँगा, अभिमान छोड़कर उस परम पवित्र आद्या का ध्यान करें। अपराध हटायें। लोलुपता का भी त्याग करें। जो कहा हूँ उसे खूब मनन कीजिये, अपने मित्रों से भी, जाति-पाति, धन धर्म बड़ाई और तुलसीदास के पैसे का भी, किससे उन्हें हनुमान मिलें। इष्ट परमावश्यक है। उद्धार करेंगे। उनका बराबर चिन्तन करेंगे। यह न सोचें कि गृहस्थ हैं तो कैसे माँ तक पहुँचेंगे। राम कृष्ण को देखें। उनकी शक्ति साथ थीं। विष्णु के उपासकों में यह रोक हैं कि बीबी, घर, परिवार, धन, धाम छोड़ दें। आप अपनी पत्नी के साथ सद्व्यवहार करें। एक नारी ब्रह्मचारी। अपने पर्व त्योहार पर संयम रखें। भोगेच्छा कम रखें। उसमें लिप्त न हो जायें। लिप्त होंगे तो स्वास्थ्य गिरेगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जायेंगे। इसलिये अपने बुद्धि से निर्णय करें। रोज की बोल चाल में कहा हूँ। आप सोचें अपने को कितना निष्ठावान, विश्वसनीय और पौरुष वाला होना है। आज के लिये विदा लेता हूँ।

अपनी पूजा भगवती की पूजा है

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्मबन्धुओं!

आप लोग जो भगवती में, गुरुजनों में श्रद्धा रखने वाले हैं और शक्ति के उपासक हैं, उन्हें इस पर्व पर बड़े ही उत्तम, पवित्र-पवित्र विचार करना चाहिए। हर एक विवाहित उस शक्ति का सहयोग लेने लगता है। उससे बहुत कुछ इच्छा करता है। इस पवित्र पर्व पर उन विवाहित व्यक्तियों को अपनी शक्ति के पत्नी के या कन्या इत्यादि के प्रति देवी स्वरूप देखेंगे। उनसे भी अपने जीवन का जिसे शान्ति कहिये उनसे कामना कीजिये। कलह, ईर्ष्या, द्वेष अपने परिवार कुटुम्ब से दूर रखें। पर्व के पवित्र गुणों के संग्रह में लगे हैं। पर्व पर एक ही गुरु से विभिन्न देवताओं, शक्तियों के मंत्र पाये व्यक्ति एकत्रित होते हैं। गुरु भी उन्हें इसी आशय से मंत्रों को वितरित करते हैं, उनके योग्यता, गुण, कर्मों के अनुसार। आप गुरु मंत्रों को यथाशक्ति गुनगुनायें। हृदय में साहस और पौरुष उत्पन्न होगा। आज पवित्र पर्व का प्रथम दिन है। मंत्र जप का जो संकल्प किये हों, करेंगे। जितना दिन जीवन का गुजार चुके हों, उतने वर्ष के हिसाब से प्रतिवर्ष उम्र के एक हजार जप कम से कम करें।

जप के साथ ध्यान करते हैं। स्वर से जो आकृति सूक्ष्म में बनता है, कल्पना मन द्वारा समझने का प्रयत्न करें। प्रणव करते हैं, मन्त्रोच्चारण करते हैं, ध्यान करते हैं। शब्द से आकृति बनती है, अक्षर बनते हैं, बोध कराते हैं। अनुभव जन्य बाते हैं आप अनुभव करेंगे। अनुभव जन्य समझेंगे। जीवन का इससे परम कल्याण होता है। इच्छायें तृप्त हो जाती हैं। कामनायें जीवन में कम हो जाती है। जीवन शान्त, एकाग्र होता है। ऐसी अनुभूति बनेगी तो शान्त चित्त बैठने पर समाधि लग जायेगी। उसमें आत्मा जिसे बड़े-बड़े योगी खोजते हैं, का साक्षात्कार होगा। हमारी इन्द्रियाँ बोध कराती हैं। इससे भिन्न-भिन्न बातें, संसार का घटना चक्र समझ में आयेगा। मनुष्य को ही आता है। सांसारिक प्रपंच से चित्त अलग होगा, सो अनुभव करेंगे। हमारे व्यक्ति हैं जो तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, कम भाषण, प्रपंच त्याग कर रहे हैं। इस तरह के तप का बड़ा फल होता है। इस गुण से मनुष्य आत्मा तक पहुँचता हैं। इष्ट मंत्र, इष्ट देवी का प्रयत्न कर ध्यान करें। ध्यान में शान्ति है। जैसी अन्त: प्रेरणा मिले वैसी क्रिया करें। बनावटी न हो, दम्भ न हो इस पवित्र पर्व पर जो कहा है उसे व्यवहार में लावेंगे। चैत्र नवरात्र के पुनीत पवित्र पर्व के दूसरे दिन श्री मुख से अमृत वाणी निनादित हुई-

पवित्र पर्व पर आप लोगों के संग में रहकर के पवित्र काशी नगरी में, गंगा के तट पर एक बड़ी नई अनुभूति, अनुभव हो रहा है। उन अनुभूतियों को वाणी के माध्यम से पहुँचा रहा हूँ। आशा करता हूँ, निष्ठा हैं जिनको, दीक्षित हैं, गुरु के सन्निकट रहने का मौका मिला हो, वे विचार करेंगे, सोचेंगे। जीवन का पवित्र कर्त्तव्य समझ कर उतारेंगे, व्यवहार में लावेंगे। मेरा भी अनुभव है जो कह रहा हूँ। अपनी पूजा, ध्यान, धारण करते हैं। जब आसन लगाकर जाप इत्यादि में बैठते हैं तो आपका एक हाथ भूमिगत होना चाहिए। क्योंकि शक्ति पृथ्वी से मिलेगी। दाहिने हाथ से जप करते हैं उस समय बायें हाथ से पृथ्वी का स्पर्श करें। सोकर उठें तो पृथ्वी को प्रणाम करे। पृथ्वी माता हैं। इनमें शक्ति है, पावर है। मल मूत्र थूक इत्यादि उदय से अस्त तक इन्हीं पर करते हैं। वह स्पर्श मुद्रा क्षमा गत है। जिस शक्ति की आवश्यकता है अपने में इनसे प्रविष्ट करेगी। आसन पर बैठे तो अंगों को मुद्रित किये रहे। मुद्रा से अपने में आकर्षण आता है। सौम्यता आती है। देखने वाले को कई चीजें परिलक्षित होती है। कई देवताओं के अंशों से मिला अंग-प्रत्यंग हो जाता है। सुदृष्टि से देखने वाले को परिलक्षित होता है। देखने से आनन्द की अनुभूति सुदृष्टि से होगी। अपने को भाव में, मुद्रा में सन्निद्ध रहना चाहिए। यह आनन्द धन से, उच्च पद प्राप्त करने में अथवा सुन्दरियों के साथ रहने से नहीं मिलेगा। चित्त को विश्राम देकर इन्द्रियों को अनुशासित करके ध्यान करेंगे। यह तो ध्यान, धारणा की बातें रहीं।

भगवती को चारों दिशाओं में प्रणाम करें। दिशा स्वरूप भी तो वही हैं। दिशा ही तो रखवार है। वही तो देखता है, कौन क्या करता है। जहाँ भी विश्व में जाइये मिलेगा। देवी के गणों के रूप में दिशा हैं योग वशिष्ठ में भी जहाँ महाकाली का वर्णन आया है, यह उद्धृत है। नवरात्र कर रहे हैं। इसका मतलब सेवा है। देवी के दिव्य गुणों का, दिव्य यंत्रों का सेवा कर रहे हैं। देवी यंत्र, गुण अपने में हैं। बाह्य रूप में भी तरह-तरह के मंत्रों, उपासना, यंत्रों द्वारा पूजा करके देवता को, अपने इष्ट को, जो अपने में है, द्रवित कर रहे हैं। पूजा तो अपना ही होता है। अपनी पूजा करते हैं। एक भक्त ने एक दिन कहा कि आपकी पूजा करने आये हैं। आपका छोड़ कर दूसरे की पूजा नहीं करता हूँ। आपकी पूजा होनी चाहिये। ये बीच में कौन सी वस्तु आ गई। लेकिन वह नहीं समझ रहा था। उत्पत्ति प्रलय हमारा, उसका, सभी का एक पराशिक्त है जो करती है। मैं नहीं चाहता कि मेरी पूजा, भगवती की पूजा आप करें। अपना पूजा ही भगवती की पूजा है। उनके जो गुण हैं, स्मृतियाँ हैं, वह हमारा होगा। वह शनै: शनै: योग्यतानुसार देते रहेंगी। इस जन्म में और जो शेष रह गया उसे बाकी जन्मों में भी देंगी। हम भूने बीज तो नहीं बनना चाहते। निर्वाण तो नहीं ले रहे हैं। हम फिर आयेंगे। ऐसा न समझे कि आये और चले गये। तुम्हारा इष्ट बराबर तुम्हार साथ रहेगा। तुम्हें प्यार करेगा, गाली देगा, साथ में खेलेगा। जीवन का यही सुख है। निरर्थक नहीं घूमें। व्यर्थ जीवन नहीं व्यतीत करें। समय को रचनात्मक कार्यों में लगावें। सेवा उन भारतीय मनुष्यों का नहीं, उस देवी का, शक्ति का जो क्षुधा रूप में, अन्न रूप में, शक्ति रूप में, विभिन्न रूपों में हमें सामर्थ्य, शक्ति दान किये हैं। ये विमुख हो जायें तो हमारा शरीर दु:खी हो जाता है, क्षोभ उत्पन्न होता है। उनकी दया है कि स्वस्थ हैं। कृपा है उनकी सामर्थ्य दिये हैं। रोगियों की तरह क्यों रहें? बाध्य होकर लोग नारकीय जीवन व्यतीत करते हैं। जिनका मन कलुषित है वे कभी ध्यान उसका किये नहीं। दूषित, कलुषित हृदय, सुन्दरियों के पीछे जीवन नष्ट करते हैं। क्षण मात्र के लिये भी ध्यान हो तो बहुत अच्छा है। क्षणमात्र का ध्यान कोटि-कोटि जन्मों के पापों का नाश करता है।

अपराध वही है जो करके स्मरण करते हो। स्मरण हो वही अपराध है, यह समझ लो। जान बूझ कर किसी बात को करे वही अपराध है। जो हो गया वह क्षमा हो जाता है। उस तरह के वातावरण में रहोगे तो अपरिचित से हो जाओगे। अपरिचित जैसा मारा-मारा फिरोगे। स्वयं भी अपने ही अपरिचित हो जाओगे। घर, परिवार, कुटुम्बी, मित्र सभी अपरिचित हो जायेंगे। इस तरह का जीवन अपने परिवार में भी लोग व्यतीत करते हैं। उनके अपने ही उनके लिये अपरिचित हो जाते हैं। सदैव ऐसी परिस्थिति ऐसे लोगों को हो जाती है। अपने कुटुम्बी भूल जाते हैं। सब पर घटता है। इसका जानकारी रखना चाहिए। इसका त्याग करना चाहिये। आगे बढ़ना है, काम करना है। यह तो लम्बे जीवन के लिये बातें हैं। सोचेंगे तो देखेंगे घटित होता है घर-घर में। ऐसा विश्वास हीनता से होता है। बात से देवता प्रसन्न होते हैं। बात यानी विश्वास। बात ही से लात खाता है, बात ही से पान खाता है, बात ही से देवी देवता को प्रसन्न करता है। माँ शक्ति को विश्वास दिलाते हैं। मंत्र क्या है? विश्वास है। अपनी बातें कहते हैं। उसका दर्शन माँगते हैं। राम कृष्णा परमहंस के बारे में सुने होंगे। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। समझ रहे थे कि ब्राह्मण का, कुल का भेद रहेगा तो देवी कैसे दर्शन देंगी। तुलसी दास जी ने भी कहा है कि जात-पात, कुल, धन, मर्यादा सब तज कर राम चरन लव लाई। इसका अभिमान रहेगा तो वह नहीं मिलेगा। शराब पीते हो तो संकोच क्यों करते हो। संकोच मत करो। इससे मत डरो कि दुनियाँ क्या कहेगी। सफलता मिलेगी तो दुनिया पूजेगी। देवी के कृपा से अपवित्र कर्म भी पवित्र हो जायेगी। उसकी कृपा नहीं रहने से पवित्र कर्म भी अपवित्र हो जायेंगे। परवाह मत करो। सफलता मिलेगी। परमहंस ने पत्तल खिलाकर उन जूठ पत्तलों से चावल चुनकर देवी को आवाहन कर वायुमण्डल द्वारा अपनी प्रार्थना देवी तक पहुँचाते थे कि माँ देखो मुझ में ब्राह्मण होने का, जाति, का कुल का, मर्यादा का अहम् नहीं है। मैं इन जूठे चावल को खा रहा हूँ। मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। तब माँ का दर्शन प्राप्त किये थे।

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़।
तुलसी दास चन्दन घिसे तिलक देत रघुबीर।।

तुलसी भी वाम मार्ग के उपासना से ही राम को प्राप्त किये थे। सुने होंगे कि पाखाना से आते थे तो बचा पानी एक पेड़ के जड़ में डालते थे। वाम मार्ग की क्रिया करते थे। इससे उन्हें भूत मिला। भूत यानि कोई आत्मा। क्रिया से उसे नहीं प्राप्त करते तो जैसे औरों को भूत लगता है उन्हें भी लगता है। वे भी ओझाई में ही रह जाते। क्रिया किये। उस आत्मा के द्वारा हनुमान जी से मिले। हनुमान जी ने मार्ग बताया राम के मिलने का। चित्रकूट में चन्दन लगाते समय सन्तों के भीड़ में राम भी आये। लेकिन तुलसी नहीं पहचान सके।

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ **हम जब वीर्य का संग्रह करेंगे और 'एक नारी व्रतधारी' बने रहेंगे, तो इससे बढ़कर हमारी तपस्या और क्या हो सकती है। किसी देवता-देवी के पूजने से और किसी साधु फकीर के द्वारे-द्वारे जाने से, यह बहुत बड़ा व्रत है। यह गुरु के आदर की भावना है, बृहस्पति और शुक्र।...यदि आप ठीक से शक्ति की उपासना करना चाहते हैं तो आपको शक्ति का अवलम्बन लेना ही होगा, शक्ति की रक्षा करनी ही होगी और शक्ति शुक्र की, वीर्य की बृहस्पति की, आपको सेवा करनी ही पड़ेगा। उसको अंडा की तरह सेना ही होगा।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी